6

दशोरा जाति

(पुस्तकों व अखबारों में)

मेवाड़ की यह दशोरा जाति सदा से ही सम्मानित एवं प्रशंसित रही है जिसका वर्णन कई इतिहासकारों ने अपनी पुस्तकों में किया है तथा कई समाचार पत्रों में भी इसके विषय में समग्री प्रकाशित होती रही है। श्री भँवर लाल भट्ट (मधुप) रामपुरा वाले ने इस जाति के विषय में एक लघु पुस्तिका भी लिखी है तथा श्री नन्द लाल दशोरा ने इस जाति पर कई पुस्तकें लिखकर इस जाति के विषय में प्रमाणिक जानकारी दी है जिससे इस जाति का पूर्ण परिचय मिलता है। कई शिला लेखों तथा ताम्रपत्रों व प्रशस्तियों में भी इस जाति का वर्णन मिलता है। इन सबसे इस जाति की उच्चता व श्रेष्ठता के प्रमाण मिलते है जो इस जाति को गौरव प्रदान करते है। इसका थोड़ा विवरण यहाँ दिया जा रहा है जिससे इसकी विशेषताओं की जानकारी हो सके।

1. रामपुरा (म.प्र.) निवासी श्री भंवर लाल भट्ट (मधुप) ने सन् 1976 ई. में ''दशोरा जाति का इतिहास'' नामक एक लघु पुस्तिका लिखी जिसमें इस जाति का संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित वर्णन है।
2. प्रसिद्ध इतिहासकार गौरी शंकर–हीराचन्द ओझा ने अपनी पुस्तक ''उदयपुर राज्य का इतिहास'' के पृष्ठ संख्या 336,574,591 तथा 656 में इस जाति के विषय में बहुत कुछ लिखा है।
3. मेवाड़ के प्रसिद्ध इतिहासकार श्री श्यामलदास जी ने ''वीर विनोद'' नामक इतिहास के पृष्ठ संख्या 309,352,402 तथा 408 में इस जाति का काफी विवरण दिया है।
4. प्रसिद्ध इतिहासकार डा. गोपी नाथ शर्मा ने अपने इतिहास ''राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत'' नामक पुस्तक के पृष्ठ सं. 133, 147, 154, 155, 156, 159, 163 तथा 164 में इस जाति का वर्णन दिया है।
5. चित्तौड़ किले पर कीर्तिस्तंभ की प्रशस्ति के श्लोक सं. 188 से 193 में इस जाति का उल्लेख मिलता है।
6. चित्तौड़ किले पर समिद्धेश्वर मंदिर की प्रशस्ति के अन्तिम श्लोक मे इस जाति का उल्लेख मिलता हैं।
7. घोसुण्डी की बावड़ी की प्रशस्ति के श्लोक संख्या 25 में इस जाति का उल्लेख है।
8. एकलिंग जी मंदिर की दक्षिण द्वार की प्रशस्ति के श्लोक संख्या 39, 40, 67 तथा 91 से 101 तक इस जातिका उल्लेख है।
9. इनके अलावा मेवाड़ में मिले दशोरा जाति के गाँवों के ताम्रपत्र, सजरे अन्य दस्तावेज तथा अन्य हस्त लिखित प्राचीन सामग्री में भी इस जाति का वर्णन मिलता है।